वार्तालाप–659, पी.वी. भाग–2 22.10.08
Disc.CD No.659, dated 22.10.08 at PV, Part-2

समय– 1.31–6.06
.....जिज्ञासु– और एक और उसमें बी.के. इन्फो पर ये समाचार सुनने को मिला है कि अमरीका के ब्रह्माकुमारी संस्था ने यू.एस पेटेन्ट ऑफिस में ब्रह्माकुमारी शब्द के लिये जो है ट्रेड़मार्क एप्लिकेशन फाइल किया है।
बाबा– अच्छा। कहां अमेरिका में?
जिज्ञासु– हां जी।
बाबा– ताकि अमेरिका में कोई दूसरा ब्रह्माकुमार–कुमारी अपना संस्था जमाके न बैठ जाये।
जिज्ञासु– नहीं। इस शब्द का कोई प्रयोग ही नहीं कर सकता आगे से अगर उनको ये, उनकी ये मंजूर हो जाती है एप्लिकेशन।
बाबा– हां।

Time: 1.31-6.06
Student: And we have also come to hear of a news through BKInfo that the Brahmakumari Institution of America has filed a trademark application for the word 'Brahmakumari' in the US Patent Office.
Baba: I see. Where in America?
Student: Yes.
Baba: So that no other Brahmakumar-kumari can establish his/her institution in America.
Student: No. If their application is accepted then nobody can use this word at all in the future.
Baba: Yes.

जिज्ञासु– तो आगे से कोई यूज़ नहीं कर पायेगा। तो जो पेटेन्ट कार्यालय वाले हैं उन्होंने पूछा है कि, आपको ये अधिकार किसने दिया? तो उन्होंने अपने ब्रह्माकुमारी संस्था के जो लेटरहैड़ है, उनसे जो है उन्होंने एक लिखवा लिया कि आपको जो है ये ब्रह्माकुमारी संस्था ब्रह्माकुमारी वर्ड का ट्रेड़मार्क लेने के लिये हम आथोराइज़ (प्राधिकृत) करते हैं। तो अगर अब ये एप्लिकेशन उनकी मंजूर हो जाती है तो फिर उनका ये कहना है कि अमरीका में उन्होंने एक अलग संस्था बनाई है। 'ब्रह्माकुमारी वर्ल्ड स्प्रीचुअल आर्गनाइजेशन' इस तरह से नाम है उसका। तो उनको वहां पर ये अधिकार होगा कि वो ब्रह्माकुमारी वर्ड का यूज़ करें और बाकी विश्व में जो है ब्रह्माकुमारी संस्था को ये अधिकार होगा। तो उनकी परमिशन के बिना कोई ये वर्ड ही यूज़ नहीं कर पायेगा, ब्रह्माकुमारी वर्ड।
बाबा– सारे विश्व में?
जिज्ञासु– हां जी।
Student: So, nobody will be able to use it in future. So, the people of the Patent Office have asked them, who gave you this authority? So, they made them write on the letterhead of the Brahmakumari Institution: this Brahmakumari Institution authorizes you to receive the trademark of the word 'Brahmakumari'. So, now if this application of theirs is granted approval then; they say that they have established a separate institution in America. Its name is somewhat like Brahmakumari World Spiritual Organization. So, there they will have the right to use the word 'Brahmakumari' and in the rest of the world the Brahmakumari Institution will have this right. So, without their permission nobody will be able to use the word 'Brahmakumari' at all.
Baba: In the entire world?
Student: Yes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– वाह। ब्रह्मा कहां है? ब्रह्मा कहां है जो ब्रह्माकुमारी कह रहे हो?
जिज्ञासु– हं।
बाबा– हं।
जिज्ञासु– तो ये मतलब इसको.....
बाबा– ये बात ही साबित नहीं होती है। ब्रह्माकुमारी तो तब कहा जाये जब ब्रह्मा मौजूद हो। उन ब्राह्मणों से पूछो कि तुम अपने को ब्रह्माकुमार–कुमारी कहते हो तो तुम्हारा ब्रह्मा कहां है? ब्रह्मा तो साबित करो। वो कहां काम कर रहा है? परमधामवासी हो गया क्या? कि कहीं जनम ले लिया? अरे ब्रह्मा ने तो ढ़ेर सारा ज्ञान उसके मुख से सुनाया गया ना। तो वो आत्मा अभी इस सृष्टि पे मौजूद होगी कि नहीं मौजूद होगी?
जिज्ञासु– मौजूद होगी।
Baba: Wah! Where is Brahma? Where is Brahma that you are saying 'Brahmakumari'?
Student: Hum.
Baba: Hum?
Student: So, it means.....
Baba: This point is not proved at all. They can be called 'Brahmakumari' when Brahma is present. (It is said in the *murli*) "Ask those Brahmins, when you call yourself Brahmakumar-kumaris; where is your Brahma?" First of all prove (the presence of) Brahma. Where is he working? Has he become the dweller of the Supreme Abode? Or has he taken birth somewhere? Arey, a lot of knowledge was narrated through the mouth of Brahma, wasn't it? So, will that soul be present in this world or not?
Student: He will be present.

बाबा– फिर? साबित करो। अमेरिका वालों को तो बेवकूफ बनाना बड़ा सहज है। वो तो कुछ भी नहीं जानते बिचारे।
जिज्ञासु– तो क्या उनको हम चैलेंज कर सकते हैं चिट्ठी लिख करके कि ये ब्रह्माकुमारी वर्ड का पेटेन्ट न दिया जाये।
बाबा– बिल्कुल। बिल्कुल झूठा साबित हो जायेगा। पेटेन्ट देनेवाले साबित हो जायेंगे। भारत में भी तो लिया था नीम के वृक्ष का अमेरिका ने। फिर क्या हुआ?
Baba: Then? Prove it. It is very easy to fool the Americans. Those poor fellows do not know anything.
Student: So, can we challenge them by writing a letter (to the Patent's Office) that they should not be given the patent of the word Brahmakumari?
Baba: Definitely. It will be proved completely false. Those who grant the patent will be proved (false). America had also taken the patent for the 'Neem' *(Melia azadirachta)* tree in India. Then what happened?

जिज्ञासु– बासमती का भी इसी तरह से लिया।
बाबा– बासमती चावल का भी लिया। फिर क्या हुआ?
जिज्ञासु– लेकिन अभी प्रोडक्शन तो कर ही रहे हैं अभी भी इंडिया वाले।
बाबा– नहीं, नहीं। जो नीम का पेटेन्ट लिया था वो वापिस करना पड़ा कि नहीं करना पड़ा?
जिज्ञासु– हां जी।
बाबा– फिर ये भी ऐसे ही वापस हो जायेगा। झूठा तो झूठा ही है। झूठा कब तलक..... झूठ के पांव नहीं होते है। कब तक टिकेगा?
जिज्ञासु– हां जी।
बाबा– ज्यादा चाणापना दिखा रही हैं ब्रह्माकुमारियाँ। पेटेन्ट करा लेंगे ब्रह्माकुमारी नाम का।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: They took (the patent) for Basmati (rice) in a similar fashion.
Baba: They took (the patent) for Basmati (rice) too. Then what happened?
Student: But Indians are still producing it (Basmati rice).
Baba: No, no. Did they have to return the patent of Neem which they had taken or not?
Student: Yes.
Baba: Then, similarly this one also will be returned. False is anyway false. False (will last) till when... Falsehood does not have feet (i.e. base). How long will it stand?
Student: Yes.
Baba: Brahmakumaris are trying to be oversmart. They want to take the patent for the name 'Brahmakumari'.

जिज्ञासु– ऐसे ही जो है उन्होने उदाहरण दिया है वो साईट वालों ने कि अमरीका में कोई हठयोग का गुरू है। उसने जो है, वो जिस प्रकार का योग सिखाता है उसने योग के लिये पेटेन्ट फाईल कर दिया। और फिर उसको मिल गया पेटेन्ट। लेकिन बाकी जो दुनिया की योग की संस्थायें हैं उन्होंने कहा ये तो हजारों सालों से योग हम करते आ रहे हैं तो सिर्फ तुमने ही जो योग सिखाया वो ही योग कैसे हो सकता है? तो फिर उनकी अर्जी जो है नामंजूर हो गई।
बाबा– फिर? ये तो सब चलता रहता है। पेटेन्ट बनायेंगे, पेटेन्ट स्वीकृत करेंगे, फिर खारिज करेंगे। इन बातों से डरना थोड़े ही है।
Student: Similarly, they, i.e. the people from the site have given an example that there is a *hathyoga* (rigid physical exercises) *guru* in America. He has filed a patent for the type of *yoga* that he teaches. And then he received the patent. But the remaining institutions of *yoga* in the world said: we have been doing this *yoga* since thousands of years. So, how can only the form of the *yoga* taught by you can be *yoga*? So, his application was rejected.
Baba: Then? All this goes on. They will make patents, they (Patent's office) will grant patents; and then they will reject them. We should not at all fear such things.

जिज्ञासु– और उससे उनकी ब्रह्माकुमारी संस्था का झूठ भी साबित होता है कि.....
बाबा– हां।
जिज्ञासु– एक तरफ से वो कहते हैं ये यूनिवर्सल नॉलेज है.....
बाबा– हां, फिर अपना पेटेन्ट करा रहे हैं।
जिज्ञासु– .....और दूसरी तरफ पेटेन्ट करा रहे हैं।
बाबा– ये क्या है?
जिज्ञासु– हां। किसी धरम का आज तक पेटेन्ट थोड़े ही हुआ कि बौद्ध धरम जो है इसी देश का है या इस्लाम धरम इसी देश का है। सारी दुनिया में हर धरम के लोग होते है।
बाबा– फिर?
जिज्ञासु– वो कर तो रहे हैं लेकिन खिल्ली अपनी ही उड़ा रहे हैं।
Student: And it also proves the lie of their Brahmakumari institution that...
Baba: Yes.
Student: On one hand they say, this is a universal knowledge……
Baba: Yes, and then they are applying for a patent.
Student: ……and on the other side they are applying for a patent.
Baba: What is this?
Student: Yes. Till date no religion has received a patent (saying) Buddhism belongs only to this country or Islam belongs only to this country. There are people of all the religions in the entire world.
Baba: Then?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: They are surely trying (to receive the patent), but are making a fool of themselves.

समय– 6.08–9.05
जिज्ञासु– और एक और प्रश्न ये है कि एड़वांस के जो ज्यादातर बच्चे हैं उनके पास शास्त्रों का, धर्मग्रंथों का इतना ज्ञान नहीं है जो कि शास्त्रकारों.....
बाबा– इतना ज्ञान रखने की जरूरत क्या है जब बाबा ने कहा – शास्त्रों में भूसा भरा पड़ा है? सच्चाई तो मैं सुनाता हूँ शास्त्रों में क्या है। तो शास्त्रों में जो सार है वो तो बाबा सुना रहा है।
जिज्ञासु– हांजी।
बाबा– तो बाबा ने जो सार सुनाया है उतना ही शास्त्रों में से बातें उठाना अच्छा है या सारा ही शास्त्रों का ज्ञान अच्छा है।
जिज्ञासु– सार–सार लेना अच्छा है।
बाबा– सार–सार लेना अच्छा है। भूसे का क्या करेंगे? जानवरों को खिला दो।
Time: 6.08-9.05
Student: Another question is that most of the children (students) in advance (party) do not have so much knowledge of the scriptures, the religious texts that (they could convince) the writers of scriptures.
Baba: What is the need to have so much knowledge, when Baba has said: the scriptures are filled with straw? It is Me who narrates the truth in the scriptures. So, Baba is narrating the essence of the scriptures.
Student: Yes.
Baba: So, is it better to pick up only those topics of scriptures related to the essence narrated through Baba or is the entire knowledge of the scriptures good?
Student: It is better to pick up the essence.
Baba: It is better to pick up the essence. What will we do with the husk? Give it (the husk) to the animals to eat.

जिज्ञासु– लेकिन अंत में बाबा ने ये भी कहा है कि जब तक दुनिया वालों को प्रूफ प्रमाण ना मिले तब तक वो मानेंगे नहीं।
बाबा– हां तो?
जिज्ञासु– तो शास्त्रकारों से या धर्मगुरूओं से अगर हमको ये....
बाबा– माना, ये शास्त्र लिखे हुये किसके हैं? भगवान के लिखे, देवताओं के लिखे या मनुष्यों के लिखे हुए हैं?
जिज्ञासु– मनुष्यों के लिखे हुए हैं।
बाबा– तो मनुष्यों के लिखे हुये शास्त्रों को प्रूफ मानना ये होशियारी है जो शास्त्र एक दूसरे का काट कर रहे हैं? एक मनुष्य की बात को प्रूफ मानेंगे या हजारों मनुष्यों की बात जो आपस में टकरा रही हैं उन सबको प्रूफ मानेंगे?
जिज्ञासु– एक की बात।
बाबा– तो फिर?
Student: But Baba has also said, in the end until the people of the world receive the proofs they will not accept.
Baba: Yes, so what?
Student: So, the writers of the scriptures or the religious *gurus*…
Baba: Meaning, who has written these scriptures? Have they been written by God, by the deities or by the human beings?
Student: They have been written by the human beings.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: So, is it cleverness to consider the scriptures written by the human beings as proofs, the scriptures which cross each other (in their explanations)? Will you consider the version of one human being as proof or will you consider all the versions of thousands of human beings which are clashing with each other as proofs?
Student: The version of one.
Baba: So, then?

जिज्ञासु– पूछने का अर्थ ये है कि जो बाबा ने शास्त्रों में या शास्त्रों की बातें बताई है क्या उसी के आधार पर हम उनको कन्विन्स कर पायेंगे अंत में?
बाबा– उन्हीं को कन्विन्स करें या तो जो एड़वांस पार्टी में जो क्लेरिफिकेशन दिया जा रहा है और शास्त्रों की बातें क्लीयर की जा रही हैं उनको उठाना है बस।
जिज्ञासु– लेकिन क्या वो इसी से कन्विन्स हो जायेंगे, जो शास्त्रकार या धर्म गुरू हैं?
बाबा– सारी दुनिया को कन्विन्स करने का क्या ठेका लिया हुआ है? हैं? सारी दुनिया जो ब्रह्मा के मुख से सुनाये हुये शिव के वर्शन्स हैं उनको माने ही माने इस बात का ठेका लिया हुआ है क्या?
जिज्ञासु– सारे तो नहीं मानेंगे।
बाबा– फिर? जो विधर्मी होंगे वो आधी बात मानेंगे आधी बातें नहीं मानेंगे। पक्के सूर्यवंशी होंगे वो मुरली की हर बात मानेंगे।
Student: I mean to ask, will we be able to convince (the various *gurus*) in the end on the basis of the topics of the scriptures mentioned by Baba?
Baba: Convince (them) with the help of only those points or you should raise the (points of) clarification being given in the advance party and the points of the scriptures which are being clarified. That is all.
Student: But will the writers of the scriptures or the religious *gurus* be convinced only with this?
Baba: Have we taken up the contract to convince the entire world? Hum? Have we taken up the contract to make the entire world believe the versions of Shiv narrated through the mouth of Brahma?
Student: Everyone will not believe.
Baba: Then? Those who are *vidharmis* (those who have inculcations opposie to that said by the Father) will accept half of the versions and reject the remaining half. Those who are real *Suryavanshis* (of the Sun dynasty) will accept every version of the *Murli*.

जिज्ञासु– लेकिन ये भी कहा गया है कि सारे धरमपिता जो है सलामी देने जरूर आयेंगे।
बाबा– सलामी दो। सलामी देने से क्या होता है? जब थक गये, सारे जिज्ञासु टूट गये, जब कोई बचा ही नहीं, तो नाक लटकायेंगे। और क्या करेंगे? धर्मगुरूओं के जब सारे जिज्ञासु टूट जायेंगे तो क्या करेंगे? अपने आप नाक लटका के आ जायेंगे। वो तो मजबूरी की बात हो गई ना।
जिज्ञासु– हां जी।
Student: But it has also been said that all the religious fathers will certainly come to salute (the Father).
Baba: Give salute. What is the big deal in saluting? When they became tired, when all their followers parted away; when nobody is left (with them), then they will certainly hang their heads (in defeat). What else will they do? When all the followers of the religious *gurus* will part away, what will they do? They will automatically hang their heads (in defeat) and come. That became an issue of compulsion, didn't it?
Student: Yes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय– 9.07–11.28
जिज्ञासु– और एक और लौकिक दुनिया की दृष्टि से एक प्रश्न है कि मुसलमानों में भी बुर्खा प्रथा है और हिन्दुओं में भी पर्दा प्रथा है। तो.....
बाबा– हिन्दुओं में तो सिर्फ मुंह ढ़ांकते हैं, चेहरे को ही ढांकते हैं। वो तो ऊपर से लेके नीचे तक, ऐडी से लेके चोटी तक सारा ही कवर कर देते हैं।
जिज्ञासु– तो इसकी शूटिंग कैसे होती है यहां?
Time: 9.07-11.28
Student: And there is another question from the point of view of the *lokik* world that *Burkha* (veil) system is prevalent among the Muslims similarly, the *Purdah* (veil) system is prevalent among the Hindus. So…
Baba: In the Hindus, they cover just their head, just their face. But, they (i.e. Muslims) cover (the body) entirely from the top to bottom, from the heels to the head.
Student: How does its shooting take place here?

बाबा– वो महाकाली संप्रदाय नहीं निकलना है? देखा नहीं महाकाली को? हैं? नहीं देखा?
जिज्ञासु– महाकाली को?
बाबा– हां। काली के जो कपड़े–वपड़े होते है वो काले होते हैं, चेहरा काला होता है, शरीर काला होता है या गोरा होता है?
जिज्ञासु– सारा शरीर काला होता है।
बाबा– काला, कालिमा से ढ़का हुआ है।
Baba: Will that *Mahakali* community not emerge? Have you not seen *Mahakali*? Hum? Haven't you?
Student: *Mahakali*?
Baba: Yes. Are *Kali*'s clothes dark, is her face dark, body dark or fair?
Student: The entire body is dark.
Baba: It is dark, covered with blackness.

जिज्ञासु– लेकिन हिन्दुओं में मतलब ये प्रथा कैसे आ गई? जो इस्लाम धरम की शूटिंग होती है और.....
बाबा– आज तो हिन्दुओं की बात ही छोड़ो। वो तो हिन्दु सारे ही विदेशी हो गये। सारी दिल्ली ही विदेशी हो गई। विदेशियों को फॉलो करने वाली हो गई। अपने स्वरूप को भूल गये तो दूसरों का रूप अपना लिया। संस्कृति, शिक्षा सब कुछ तो अपना लिया। जब देहभान बढ़ता है, अपने देहभान को कंट्रोल नहीं कर पाते हैं, अपनी आँखों को कंट्रोल नहीं कर पाते है, तब फिर ऐसे ये जो झूठे–झूठे साधन हैं वो अपनाये जाते हैं। घूंघट मारना। अरे आँखों का घूंघट सबसे बढ़िया है। कोई जरूरी है कि दूसरा हमको देख रहा है वो हमको देखें ही देखें?
जिज्ञासु– आँखें फेर सकते हैं।
बाबा– आँखें भी तो घूंघट है। ये तो जैसे–जैसे विदेशियों का संग रंग बढ़ता गया वैसे–वैसे भारतीयों में देहभान बढ़ता गया और देहभान बढ़ने के कारण फिर उन्होंने ये झूठे साधन अपनाना शुरू कर दिया।
Student: But I mean to ask, how did this practice begin among the Hindus? The shooting of Islam religion that takes place….
Baba: Leave the topic of Hindus of today. All those Hindus have become foreigners. The (people of) entire Delhi have become a foreigners; it follows the foreigners. When they (Hindus) forgot their form, they adopted others' form. They have indeed adopted (foreign) culture, education, and everything. When the body consciousness increases, when they are unable to control their body consciousness, when they are unable to control their eyes, then

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

such false means (like veils) are adopted. Covering (the face) with *ghoonghat* (the end panel of the *saree* used by some women to cover the head) Arey, the *ghoonghat* of eyes is the best. Is it necessary that when someone sees us, we should see him?
Student: We can turn our eyes away.
Baba: Eyes are also a kind of *ghoonghat*. As and when the influence of the company of the foreigners went on increasing, body consciousness increased among the Indians and because of the increase in the body-consciousness they started adopting this false means.

समय– 11.30–18.26
जिज्ञासु– और एक और प्रश्न जो है लौकिक दुनिया में जो आश्रमों में रहते हैं उनके लिये तो ठीक है लेकिन जो लौकिक दुनिया में नौकरी करते हैं, पी.बी.केज़ या बीकेज़ जो भी हैं। तो उनके सामने खानपान की समस्या आती है। तो बाकी सब विषयों में तो मतलब वो कन्विन्स कर पाते हैं लेकिन खान–पान के विषय में जो है सारी दलीलें देने के बावजूद भी जो है लौकिक दुनिया वाले ये प्रश्न करने लगते हैं कि क्या हम शूद्र हैं? हमको इतना पतित क्यों मानते हो कि हमारे हाथ का आप नहीं खा सकते हो। हम आपको जो है शुद्ध, स्नान करके, पवित्र, भगवान की याद में हम आपको बना के खिलायेंगे। आप हमारा खाना क्यों नहीं खाते हो?
बाबा– हां, तो?
Time: 11.30-18.26
Student: And another question is, it is easy for those who live in the *ashrams* in the *lokik* world, but the PBKs or BKs who work in the *lokik* world face the problem regarding food. So, in all the other matters they are able to convince (the friends and relatives) but in case of food, in spite of giving all the reasons, the people of the world start asking: are we *shudras*? Why do you consider us to be so sinful *(patit)* that you cannot eat food cooked by us? We will cook for you in a pure state, after taking bath, in the remembrance of God. Why don't you eat food cooked by us?
Baba: Yes, so?

जिज्ञासु– तो वो ये मानने को तैयार नहीं हैं कि हम शूद्र किस आधार पर हो गये?
बाबा– शूद्र किस आधार पर हो गये? शूद्रों का संग करते हैं। सारी दुनिया इस समय शूद्र बन पड़ी है। तुलसीदास ने अभी की बात छोड़ो, 500 साल पहले ही लिख दिया – भये वर्ण संकर सबै, सारे ही वर्णसंकर हो गये। सब शूद्र हो गये। अब तो 500 साल के बाद कितना शूद्रपना फैल गया है। संगदोष अन्नदोष कोई चीज नहीं होती है क्या?
Student: So, they are not ready to accept this, (they ask), on what basis are we *shudras*?
Baba: On what basis are we *shudras*? They keep the company of *shudras*. In the present time, the entire world has become *shudra*. Leave aside today's issue, Tulsidas had already written it 500 years ago: '*bhaye varna sankar sabai'*. Everyone has become *varnasankar* (of hybrid/mixed class). Everyone has become a *shudra*. *Shudra* character has now spread so much after 500 years. Isn't there anything like influence of company and influence of food?

जिज्ञासु– वो ये भी पूछते हैं कि जब आप इतना ऊँचा ज्ञान लेते हो तो क्या कोई आपको अगर प्यार से भोजन देता है तो क्या आप उसको पवित्र नहीं बना सकते हो दृष्टि दे करके?
बाबा– ये हर आत्मा की अपनी पावर की बात है। सब आत्मायें एक जैसी पावरफुल नहीं हैं। कन्याओं माताओं को तो और ही ज्यादा संग का रंग लगता है। और ही भोजन का ज्यादा असर करता है। वो तो अबला हैं। उनका तन भी अबला है। मन भी अबला है। दृष्टि भी अबला है। जब तक संपन्न स्टेज में पुरूषार्थ की न पहुँचे, तब तक ऐसे ही चलना पड़ेगा। अपनी सुरक्षा अपने आप करनी पड़ेगी। जितना कायदा करेंगे उतना फायदा होगा। फिर तो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

संगदोष को भी लपेट लो। किसी का भी संग करो इंद्रियों से। कोई असर पड़ता है? बाबा को याद करो। हो जायेगा? चल जायेगा?
जिज्ञासु– पतित आत्माओं का संग का रंग तो लगेगा ही।
Student: They also ask, when you are taking such a high knowledge, and when someone offers you food with love, can't you make it pure by giving *drishti* (vision)?
Baba: This depends on each soul's individual power. All the souls are not equally powerful. Virgins and mothers are influenced by the company even more. And the (influence of) food has more effect on them. They are indeed weak *(abala)*. Their body is weak and their mind is weak as well. Their vision is weak too. Until you reach the complete stage of the special effort for the soul, you will have to follow like this. You will have to defend yourself. The more you follow the rules, the more benefits you will reap. (If you feel you are very powerful) You can also try the influence of company. Be in the company of anyone through the bodily organs. Does it affect you? Remember Baba (while being in such bad company). Will it do? Will it be alright?
Student: The company of the sinful souls will certainly have an influence.

बाबा– तो पतित आत्माओं का भोजन खायेंगे तो भोजन असर नहीं करेगा? उनका वायब्रेशन नहीं होता? उनकी दृष्टि नहीं होती है, पतित? अब कोई हार्ड एंड फास्ट रूल थोड़े ही है। जो कर सकें सो करें। जितना कायदा करेंगे उतना फायदा होगा। नहीं करेंगे अपने लिये करेंगे। करेंगे तो अपने लिये करेंगे। बाबा तो किसी के ऊपर कोई कम्पल्शन करता ही नहीं है। न कि किसी को सूली पे टांग दिया है। तुम जितना कर सको उतना करो। करोगे अपने लिये करोगे नहीं करोगे तो शिवबाबा के लिये कर दोगे क्या? करके देख लो। जब अच्छी तरह गड्ढे में चले जाओ तब फिर मान लेना।
Baba: So, if you eat food cooked by the sinful souls, will the food not have any effect? Isn't their vibration, their vision impure? Well, it is not a hard and fast rule. Whoever can follow (the rule) should follow it. The more you follow the rules, the more benefits it will bring. If you do not follow it, you will not do it for yourself. If you follow it, you will do it for yourself. Baba does not at all compel anyone. He has never hanged anyone either (for not following the rules). Follow as much as possible. If you follow, you will reap the benefits; if you do not follow, will Shivbaba benefit from it? You can try and see. When you fall in the pit completely you can accept (the benefit of following the rules).

बाबा– अरे एड़वांस पार्टी में बताया गया आँखें मिलाना गलत काम है। आँखे भी इंद्रियां हैं। इंद्रियों का व्यभिचार अच्छा नहीं होता। ब्रह्माकुमारियों ने नहीं माना। सख्त आपोजिशन किया। अब वो ही बड़ी बड़ी ब्रह्माकुमारियाँ खुद नहीं बैठती है याद में। असिसटैंट बहनों को बैठाने लगीं। क्यों ऐसा करना उन्होंने शुरू कर दिया? उन्होंने जान लिया कि हमारी दृष्टि वृत्ति पतित होती जा रही है। तीव्रता से हम नीचे गिर रहे हैं। तो प्रैक्टिकल करके देख लो। जब अच्छी तरह गड्ढे में चले जाओ तो चोटी पकड़ के उठा लेगा। अभी गिरने का टाइम है या उठने का टाइम है?
जिज्ञासु– अभी तो उठने का टाइम है।
बाबा– फिर? उठने के टाइम पे तुम्हारी बुद्धि ऐसी चल रही है कि हम गड्ढे में जायें तो अच्छा है। जाओ गड्ढे में।
Baba: Arey, it has been said in the advance party: it is wrong to exchange glance. Eyes are organs too. The adultery of organs is not good. The Brahmakumaris did not accept this. They opposed strongly. Now the same senior Brahmakumaris do not sit in meditation (to give *drishti* in a class) themselves. They started making the assistant sisters to sit (to give *drishti* in a class). Why did they start doing so? They realized: our vision and vibrations are going on

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

becoming impure. We are falling down at a fast rate. So, you can do it practically and see. When you fall into the pit completely then, He will lift you with your *choti* (top-knot). Is it a time now to fall or to rise?
Student: It is the time to rise now.
Baba: Then? At the time of rising, your intellect is thinking: it will be better if we fall in the pit. Fall into the pit (if you want).

जिज्ञासु– और उस चर्चा में मतलब ऐसे भी उदाहरण आते हैं कि कई बी.के., पी.बी.के हैं जो मतलब अपने बुजुर्ग माता–पिता के हाथ का भी खाना छोड देते है कि .....
बाबा– जो बुजुर्ग हो जाते हैं उनकी बुद्धि उनकी मेंटलिटी और ज्यादा विकारी हो जाती है कि निर्विकारी बन जाती है? जो वायब्रेशन हैं उनके मेन्टलिटी के वो सारी जीवन के जो विकार के वायब्रेशन हैं वो वृद्ध अवस्था में बढ़ जाते हैं या कम हो जाते हैं?
जिज्ञासु– बढ़ जाते हैं।
बाबा– तो फिर? उसका असर क्या होगा? अब चाहे माता हो, चाहे बहन हो या कोई भी हो। अगर ज्ञान में चल रहा है तो फिर भी अपने को कंट्रोल करने की कोशिश करेगा। ज्ञान में नहीं चल रहा है तो खुला हुआ रास्ता है नीचे गिरने का। वो कंट्रोल करना जानता ही नहीं है।
Student: Moreover, in that discussion many such examples are quoted like many BKs, PBKs stop eating the food cooked by their aged parents so that…….
Baba: Does the intellect and mentality of those who become old become more vicious or viceless? Do the vibrations of their mentality, the vibrations of the vices of their entire life increase in the old age or do they reduce?
Student: They increase.
Baba: Then? What will be its effect? Be it a mother, a sister or anyone. If he is following the path of knowledge, there are chances he will try to control himself. If he is not following the path of knowledge, the path to downfall is open to him. He does not know how to control himself at all.

जिज्ञासु– नहीं समझो कोई बुजुर्ग माता है विधवा है,.....
बाबा– बुजुर्ग है तो क्या मन के अंदर विकारी संकल्प नहीं आते हैं? इन्द्रियां ही तो निस्तेज हो गई हैं। मन तो निस्तेज नहीं हो गया। दृष्टि तो कंट्रोल नहीं हो गई।
जिज्ञासु– अब उनका ये पूछना है, कि समझो कोई अस्सी साल की बुजुर्ग माता है, वो कई सालों से पवित्रता का पालन कर रही है स्थूल इन्द्रियों से।
बाबा– ठीक है।
Student: No, suppose there is an elderly mother, who is a widow……...
Baba: Even if she is elderly, don't vicious thoughts emerge in her mind? Only the organs have become spiritless, but the mind has indeed not become weak. Their vision is certainly not under their control.
Student: Well, their question is, suppose there is an eighty years old elderly mother and she is practicing celibacy through her physical organs for many years.
Baba: OK.

जिज्ञासु– लेकिन कोई बी.के या पी.बी.के. हो सकता है वैसे तो मतलब नाम के लिये बी.के., पी.बी.के. लेकिन उसके मन के संकल्प खराब हो सकते हैं। तो अब...
बाबा– कंट्रोल कौन करेगा दोनों में से?
जिज्ञासु– कंट्रोल तो ये.....

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– जिसमें ज्ञान होगा वो ही कंट्रोल करेगा कि जो बिल्कुल अज्ञानी है, जानता ही नहीं है कुछ, वो कंट्रोल करेगा? मन को कंट्रोल करना ये सबके बस की बात है या सिर्फ पी.बी.के. और बी.के. के बस की बात है?
जिज्ञासु– बी.के., पी.बी.के. की।
बाबा– फिर? मन ही तो मुख्य इंद्रिय है। मन को कंट्रोल कर लिया तो सारी इंन्द्रियां कंट्रोल हो जाती है। मन कंट्रोल नहीं तो सारी इंद्रियां कंट्रोल से बाहर है समझो। अगला जन्म लिया और जैसे ही बड़े होंगे फिर इंद्रियां अपनी स्थिति को पकड़ लेंगी। बच्चा रहेंगी तब तक मर्ज रहेगा। संस्कार तो रहेंगे ना। वायब्रेशन तो रहेंगे ना।
Student: But there could be a BK or PBK who may otherwise be a BK or PBK for namesake. But the thoughts of his mind can be bad. So, now...
Baba: Between both of them (i.e. between the one who doesn't follow knowledge and a BK/ a PBK) who will control (his mind)?
Student: As regards to controlling...
Baba: Will the one who has knowledge control (his mind) or will the one who is completely ignorant, the one who doesn't know anything at all control (his mind)? Is it possible for everyone to control his mind or is it possible only for the PBKs and BKs?
Student: For the BKs and PBKs.
Baba: Then? The mind alone is the main organ. If you have controlled the mind, all the other organs come under control. If you don't have control over the mind, then consider that all your organs are out of control. If he takes the next birth and as soon as he grows up, his organs will regain the same state (of going out of control). They will remain merged (i.e. subdued) as long as he is a child. But the *sanskars* will remain, won't they? The vibrations will remain, won't they?

समय– 18.27–20.35
जिज्ञासु– इसी तरह की एक समस्या कुमारों के सामने आती है शादी की। तो जो ज्ञान में चलने वाले कुमार हैं वो तो हर तरह से कन्विस करने की कोशिश करते हैं अपने लौकिक साथियों को कि किस आधार पर हमने ये पवित्र जीवन अपनाया है। लेकिन वो लौकिक वाले जो है अपनी हर तरह से दलील देते रहते हैं कि जब तक तुमने गृहस्थ जीवन के दुख–सुख का अनुभव नहीं किया है तो तब तक हम कैसे मान लें कि तुमने विकारों पर जीत पा ली है? बाबा– हम कहां कह रहे हैं कि हमने विकारों पर जीत पा ली है? हम तो पुरूषार्थी हैं। ये तो कहना गलत हो गया कि हमने जीत पा ली। उल्टा ज्ञान क्यों उठाना? हम तो विकारों पर जीत पाने के पुरूषार्थी हैं। हम कहां कह रहे हैं हम देवता बन गये।
Time: 18.27-20.35
Student: A similar problem is faced by the *Kumars* (unmarried BKs/PBKs); that of marriage. The *Kumars* who follow the knowledge try to convince their *lokik* friends in every manner about the reasons why they have adopted the pure life. But those *lokik* people keep giving different pleas (like) up until you have experienced the sorrows and joys of the married life, how can we accept that you have gained victory over vices?
Baba: We are not saying that we have gained victory over vices? We are makers of special effort for the soul *(purusharthi)*. It is wrong to say that we have gained victory (over vices). Why should we grasp the knowledge in an opposite way? We are making special effort for the soul to gain victory over vices. We are not saying that we have become deities?

जिज्ञासु– वो कहते हैं अभी तुमने शादी ही नहीं की। तुम तो सन्यासी की तरह हो।
बाबा– शादी तो नहीं की है। लेकिन जब हम आँख से देखते हैं तो हमें पता तो चलता है कि हमारे अंदर कितना पतितपना है? दृष्टि हमारी पतित है कि पावन है?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– हां जी।
बाबा– दृष्टि हमारी जो है वो हमको व्यभिचार की तरफ खींच रही है या अव्यभिचारी बना दिया है? मालूम नहीं पड़ता अंदर से?
जिज्ञासु– वो तो पता चलता है।
Student: They say that you are not yet married. You are like *sanyasis*.
Baba: We are not married, but when we see through the eyes, we do come to know, how much sinfulness is in us. Is our vision sinful or pure?
Student: Yes.
Baba: Is our vision pulling us towards adultery or have we made it pure? Don't we come to know from inside?
Student: We do come to know.

बाबा– फिर? इसके लिये हमें शादी करने की क्या जरूरत है? बिना शादी किये हम अपने परिवार के अंदर जो बहनें हैं, भांजियां हैं, उनके साथ रह करके हम अपने को चेक नहीं कर सकते? अंदर से नहीं आता? समझते नहीं हैं कि हम विकारी हैं कि निर्विकारी हैं?
जिज्ञासु– वो तो हरेक को पता चल जाता है।
बाबा– फिर? हमें अंदर से पता चल रहा है कि हम नहीं कंट्रोल कर पायेंगे। और हमें मुरली ऊपर से बता रही है कि पहले ही दिन ढ़ेर हो जावेंगे शादी करने के बाद। तो जानबूझकरके 'आ बैल तु मुझे मार' ये करने की क्या जरूरत है?
Baba: Then? What is the need for us to get married for this? Without being married, can't we check ourselves while living with our sisters, nieces in our family? Don't we feel from inside? Don't we understand whether we are vicious or viceless?
Student: Everyone realizes that indeed.
Baba: Then? If we are realizing from inside that we will not be able to control; in addition the *Murli* is telling us that we will experience downfall on the very first day of the marriage. So, what is the need to invite trouble *(Aa bail tu mujhe maar)* deliberately?

समय– 20.40–21.24
जिज्ञासु– और एक और प्रश्न ये आया है कि क्या बी.के., पी.बी.केज़ को अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिये क्या वो योगासन या किसी तरह की कसरत या किसी तरह के खेल कूद में हिस्सा ले सकते हैं?
बाबा– ज्यादा टाइम वेस्ट करने की क्या जरूरत है? जितना जरूरत हो उतना, जैसे दवाई लेते हैं वैसे ये भी कर सकते हैं। बी.के., पी.बी.के. दवाई लेते हैं कि नहीं लेते हैं?
जिज्ञासु– लेते हैं।
बाबा– तो जैसे दवाई लेते हैं और अगर आसन प्रणायाम से कुछ फायदा हो सकता है तो वो करना कोई मना थोड़े ही है। कोई खराब काम तो है नहीं।
जिज्ञासु– हां, जी।
Time: 20.40-21.24
Student: And another question has been asked: can the BKs or PBKs do *yogasanas* or any kind of exercise or participate in any kind of sports to keep their body fit?
Baba: What is the need to waste more time? You can do this only to the extent it is necessary, just as we take medicines. Do the BKs, PBKs take medicine or not?
Student: They do.
Baba: So, just as they take medicines, if there can be any benefit from *asanas* or *pranayam (*breathing execises*)*, then there is no restriction on doing it. Anyway, it is not a bad thing.
Student: Yes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय– 21.30–23.22
जिज्ञासु– और एक प्रश्न आपसे पूछा था कि निश्चयपत्र में जो है मम्मा बाबा का लौकिक नाम क्यों लिखा जाता है?
बाबा– वो लिखने वालों से पूछो। हमसे क्यों पूछते हो? निश्चय पत्र हमने लिखके दिया है या उन्होंने लिख के दिया है? हैं? हमने लिखके दिया है?
जिज्ञासु– ना लिखने वालों ने लिख....
बाबा– लिखने वाले लिख रहे हैं। अभी मम्मा का नाम भी लिख रहे हैं। मम्मा तो त्यागपत्र भी दे करके अलग हो गई। लिखने वाले लिख रहे हैं। उनकी श्रद्धा विश्वास। आप उन्हें कन्विन्स करो जाके। निश्चयपत्र कैंसिल करवाओ जाके।
Time: 21.30-23.22
Student: And I had asked you a question regarding why are the *lokik* names of Mamma and Baba written on the letters of faith?
Baba: About that, ask those who are writing it. Why do you ask me? Have I written the letter of faith or have they given in writing? Hum? Have I written it?
Student: No, those who wanted to write have written…
Baba: Those who want to write are writing it. Now they are also writing the name of Mamma. Mamma has even given resignation *(tyaag-patra)* and separated. Those who wish are writing ti; it is their faith and belief. Go and convince them. Go and make them cancel their letters of faith.

जिज्ञासु– उसी संबंध में जो है एक और प्रश्न ये उस साईट पर आया था कि मम्मा बाबा दोनों के नाम के साथ दीक्षित सरनेम जुड़ा होता है।
बाबा– हां।
जिज्ञासु– तो क्या दोनों की दुनियावी दृष्टि से कोई कोर्ट मैरेज वगैरह हुई थी?
बाबा– ऐसा तो कुछ नहीं हुआ। कोई अपने नाम के आगे कोई टाइटिल जोड़ना चाहे तो क्या कोई बंदिश है क्या? बंदिश है?
जिज्ञासु– नहीं है।
बाबा– फिर? जोड़ने वाला जोड़ना चाहता है तो उनको क्या दर्द हो रहा है?
Student: In relation to the same question another question had emerged on the site, the surname *'Dixit'* is suffixed with the names of Mamma as well as Baba.
Baba: Yes.
Student: So, have they undergone Court marriage, or something like that from worldly point of view?
Baba: No such thing has happened. Is there any restriction if someone wants to add some title to his/her name? Is there any restriction?
Student: No.
Baba: Then? If the person wishes to add (the surname), why are they feeling pain in it?

जिज्ञासु– लौकिक दुनिया में भी ऐसा ही हुआ था–फिरोज गांधी ने जो है गांधी का दत्तक पुत्र होने के नाते गांधी अपने साथ जोड़ लिया।
बाबा– गांधी टाइटिल ले लिया।
जिज्ञासु– और वो फिर.....
बाबा– दूसरों को दर्द क्यों हो रहा है? ये तो अपने–अपने मन का मेल है। जब तक जिसका जिसके मन से मेल होता है वैसा टाइटिल ले सकता है। देनेवाला टाइटिल न भी दे तो भी लेने वाला लेना चाहे तो कोई जबरदस्ती है क्या? नहीं ले सकता?
जिज्ञासु– ले सकता है।
बाबा– फिर?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: It had happened like this in the *lokik* world too. Being the adopted son of Gandhi, *Feroze Gandhi* had suffixed 'Gandhi' to his name.
Baba: He adopted the title 'Gandhi'.
Student: And then…
Baba: Why are the others feeling the pain? It depends on the choice of every person's mind. As long as someone's heart is attached to another one, he/she can adopt his title. Even if the giver does not give, someone wants to take it, is there any compulsion? Can't he adopt it?
Student: He can adopt.
Baba: Then?

समय– 23.23–26.15
जिज्ञासु– और कुछ लोग जो पी.बी.के. छोड़के जाते हैं या दूसरी पार्टियां जो निकल रही हैं उनका जो ज्ञान सुनते हैं तो उनकी ये शिकायत है कि उन्हें पी.बी.के. मिनिमधुबनों में क्लास करने नहीं दिया जाता है। तो ऐसा क्यों किया जाता है?
बाबा– ऐसा इसलिये किया जाता है कि पहले वो अपने बाप का नाम बतायें। जिस बाप से वो पढ़ाई पढ़ते हैं जिस बाप से उन्होंने जन्म लिया है उसका परिचय दें। यहां तो एक परिवार है, बाप का परिवार। एक परिवार के बच्चे एक परिवार में बैठेंगे या भंगियों और चमारों के परिवार के लोगों को हम अपने परिवार में घुसेड़ लेंगे? संग का रंग नहीं लगेगा? लगेगा या नहीं लगेगा?
जिज्ञासु– लगेगा जरूर।
Time: 23.23-26.15
Student: And some people who go away leaving the (path of) PBKs or those who listen to the knowledge of the other 'parties' which are emerging, have a complaint that they are not allowed to attend the classes at the PBK *Minimadhubans*. So, why is it done so?
Baba: It is done so because they should first tell the name of their father. They should give the introduction of the father from whom they learn, the father through whom they have taken birth. Here it is only one family, the Father's family. Will the children of one family sit in one family or will we allow the people of the families of *bhangis*(scavengers) and *chamars* (cobblers) (in literal sense they refer to the lowermost castes among Hindus) to enter our family? Will we not be coloured in their company? Will we be coloured or not?
Student: We will certainly be coloured.

बाबा– उनके तो बाप का ही पता नहीं। विष्णु–विष्णु विष्णु–विष्णु चिल्लाते फिर रहे है। बाप का परिचय तो दें पहले। तुम्हारा बाप कौन है? तुम किसकी मत पर चलते हो? तुम्हारा टीचर कौन है? सुप्रीम टीचर का तो नाम बताओ। मुरली में तो बोला है बाप टीचर सद्गुरू एक ही है। हैं? जो पूछने वाले हैं उनके परिवार में दूसरे चोर डकैतों के लोगों को जाकर बैठा दें तो स्वीकार कर लेंगे?
जिज्ञासु– नहीं करेंगे।
बाबा– फिर? ये तो चोर हैं जो भगवान का टाइटिल ले करके बैठे हुये हैं, देवताओं का टाइटिल ले करके बैठे हैं।
Baba: They don't know the father at all. They are just roaming around shouting Vishnu-Vishnu, Vishnu-Vishnu. First of all let them give the introduction of the Father. Who is your Father? Whose opinion do you follow? Who is your teacher? At least, tell the name of the Supreme Teacher. It has been said in the *Murli* in fact, that the Father, Teacher, *Sadguru* is one. Hum? If we make thieves and dacoits to sit with the family members of those who are asking this question, will they accept them?
Student: They will not.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Then? Those who have taken the title of God are indeed thieves; they have taken the title of the deities.

जिज्ञासु– अब वो ये दलील देते हैं कि जब पी.बी.केज़ को बी.के. के यहां आने नहीं दिया जाता है तब तो आप उनको कहते हैं कि ये गलत है।
बाबा– कारण है ना। कारण है ना। बी.के. वाले जिन्होने बी.के कोर्स लिया है, जिन्होने बी.के. की भट्ठी की हैं उन्हीं को आने देते हैं या जो ब्रह्मा को नहीं मानते उनको आने देते है?
जिज्ञासु– जो बी.के. को मानते हैं उनको तो आने देते है।
Student: Well they give a plea that when PBKs are not allowed to come to the BKs, then you tell them, this is wrong.
Baba: There is a reason, isn't it? There is a reason, isn't it? Do the BKs allow only those who have taken BK course, those who have done BK *bhatti* to come or do they allow those who do not accept Brahma?
Student: They allow those who accept the BKs, to come.

बाबा– यहां तो ब्रह्मा, विष्णु तीनों को मानने की बात है। तीनों का परिचय दो त्रिमूर्ति बाप का परिचय दो और आ करके बैठो। अरे एक परिवार में एक ही परिवार के सदस्य बैठेंगे या के सभी को मिक्स करके बैठाया जायेगा?
जिज्ञासु– एक ही परिवार के।
बाबा– हां जब तक एक बाप की पहचान नहीं होती है तब तक अलग बैठ करके सुनो, समझो। जब तुम्हें निश्चय हो जाये तब निश्चयपत्र लिखना, माफीनामा लिखना कि हम दो–दो बाप, तीन–तीन बाप बनाये बैठे हैं। जो किया है वो लिखना तो पड़ेगा ना। तो लिखो। हम झूठी बात तो नहीं लिखवा रहे।
Baba: Here, it is certainly about accepting Brahma, Vishnu (and Shankar), all the three. Give the introduction of all the three, give the introduction of the *Trimurty* Father and come and sit (in the class). Arey, will members of the same family sit together in a family or will everyone be mixed and made to sit?
Student: Members belonging to the same family.
Baba: Yes. Until they recognize the one Father, sit separately, listen and understand. When you develop faith, write the letter of faith; write the letter seeking pardon (saying): we have adopted two, three fathers. You will certainly have to write whatever you have done, won't you? So, write it. After all, we are not making you write lies.

समय–26.18–27.38
जिज्ञासु– और कुछ लोग जो पी.बी.के. छोड़ के गये हैं उनका ये भी कहना है कि यहां एड़वांस पार्टी में पी.बी.के. बहनों को भाइयों से मिलने नहीं दिया जाता है। उनको बिल्कुल सुरक्षित रखा जाता है।
बाबा– हां।
जिज्ञासु– तो वो कहते हैं कि ये जो है इस्लाम धरम की शूटिंग कर रहे हैं। उनको अंदर छुपा के रखा जाता है।
Time: 26.18-27.38
Student: And some people, who have left the PBK (family) and gone away, also say that here, in the advance party, PBK sisters are not allowed to meet the brothers. They are kept under absolutely safe custody.
Baba: Yes.
Student: So, they say, this is like performing the shooting of Islam. They are kept hidden inside.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय–26.47
बाबा– कोई गलती ऐसी पकड़ते हैं, ऐसा कोई हमारे पास पोतामेल आता है तब ऐसा किया जाता है। तुम्हारे पास तो पोतामेल नहीं आता है। आता है?
जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– फिर? बाप को जब पता चलेगा कि बच्चा ऐसा शैतान है, ऐसा निकम्मा है, बाप की डोर पात गंवाने वाला है तो उस बच्चे को बच्चियों से बचायेगा नहीं?
जिज्ञासु– बचायेगा।
बाबा– बच्चियों को ऐसे दुष्कर्म करनवाले बच्चों से नहीं बचायेगा?
जिज्ञासु– हां।
बाबा– फिर? ये सब विदेशियों के प्रश्न है। जिन्होंने विदेशियता फैलाई है और व्यभिचार बढ़ाया है दुनिया में। बाप तो अभी निर्विकारी दुनिया बनाने आया है। अव्यभिचारी दुनिया बनाने आया है।
Time: 26.47
Baba: When any such mistake is caught, when any such *potamail* comes to us, such a step is taken. It is not you (those who are asking the question) who receive the *potamail*. Do you receive it?
Student: No.
Baba: Then? When the father comes to know that a son is so wicked, so useless, and is going to cause loss of father's honour, then will he not save the daughters from that son?
Student: He will save.
Baba: Will he not save the daughters from the sons who perform such wicked acts?
Student: Yes.
Baba: Then? All these are the questions of the foreigners, who have spread foreign culture and have increased adultery in the world. The Father has surely come now to create a viceless world. He has come to create a righteous world.

समय– 27.40–31.00
जिज्ञासु– और एक और बात ये जानकारी में आई है कि बाबा जो है आजकल नेचुरोपेथी का पालन कर रहे हैं।
बाबा– तो क्या बड़ी बात हो गई?
जिज्ञासु– और दूध.....
बाबा– बाबा नेचुरोपेथी का पालन कर रहे हैं। बाबा होम्योपेथी का पालन कर रहे हैं। बाबा क्या होता है वो बीजथेरेपी का पालन कर रहे हैं। कोई खराब काम कर रहे हैं? हैं?
Time: 27.40-31.00
Student: And I have come to know one more thing that Baba is now-a-days following naturopathy.
Baba: So, what is the big deal in it?
Student: And milk…
Baba: Baba is following naturopathy. Baba is following homeopathy. And Baba is following…. what is called the seed-therapy. Is he doing anything wrong? Hum?

जिज्ञासु– ये सुनने में आया है कि दूध या दूध के जो भी उत्पाद हैं, प्रोडक्टस हैं, तो उनका उपयोग कम कर दिया या बंद कर दिया है बाबा ने।
बाबा– ऐसा तो कुछ नहीं है।
जिज्ञासु– ऐसा नहीं है?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– सारी दुनिया के जितने भी प्राणी मात्र हैं वो मनुष्य के लिये हैं या मनुष्य प्राणियों के लिये है?
जिज्ञासु– प्राणी मनुष्यों के लिये हैं।
Student: I have heard that Baba has either reduced or stopped the consumption of milk or milk products.
Baba: There is nothing like that.
Student: Is it not so?
Baba: Are all the animals present in the world for the sake of the human beings or are the human beings present for the sake of the animals?
Student: The animals are there for the sake of the human beings.

बाबा– प्राणी जो हैं वो मनुष्यों के लिये हैं। तो प्राणियों से जो निकला हुआ दूध है वो दूध प्राचीन काल से सेवन होता चला आया है।
जिज्ञासु– हां जी।
बाबा– और अभी भी सेवन किया जा रहा है। तो खराब बात क्या है? दूध तो दूध है। वो कोई मांस तो नहीं है। खून तो नहीं है।
Baba: The animals are there for the sake of the human beings. So, the milk produced by the animals is being consumed since ancient times.
Student: Yes.
Baba: And it is being consumed even now. So, what is wrong in it? Milk is after all milk. It is certainly not meat. It is certainly not blood.

समय– 28.59
जिज्ञासु– दुनिया में भी कुछ लोग ये अभियान मतलब उन्होंने चलाया हुआ है कि दूध जो है केवल बछड़े के लिये ही होता है। और उसको आदमी को नहीं पीना चाहिये। लेकिन आदमी पीता तो आ रहा है।
बाबा– पीने से फायदा हो रहा है या नुकसान हो रहा है?
जिज्ञासु– फायदा ही हो रहा है।
बाबा– फायदा हो रहा है तो उनको तकलीफ क्या हो रही है?
जिज्ञासु– वो ये कहते हैं कि .....
बाबा– हां।
Time:
Student: In the world too, some people have started a campaign that (cow's) milk is only for her calf. Man should not drink it. However, man has been drinking it.
Baba: Is drinking (of milk) causing benefit or harm (to the man)?
Student: It is indeed bringing about benefit.
Baba: When it is bringing about benefit, why are they feeling troubled?
Student: They say that…
Baba: Yes.

जिज्ञासु– वो ये कहते हैं कि आज की कलियुगी दुनिया में जो है दूध निकालने के लिये गायों के साथ बहुत अत्याचार किया जाता है। कई इंजेक्शन उनको लगाये जाते हैं।
बाबा– और कीड़ों को और मच्छरों को मार रहे हो। उनके साथ अत्याचार क्यों कर रहे हो? मक्खियों को मार रहे हो इतनी दवाइयां डाल–डाल करके उनके साथ अत्याचार क्यों कर रहे हो? कीडे–मकौडे जानवरों के लिये बड़ी वो सहानुभूति पैदा हो रही है। मनुष्यों के लिये सहानुभूति नहीं पैदा हो रही है? अरे, जानवर भी अपनी जाति के लिये मरते हैं। तुम तो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

मनुष्य हो। मनुष्य हो करके मनुष्यों की सेफ्टी की बात नहीं करते। जानवरों की बात सोचते हो। जानवर बुद्धि हो।
Student: They say that cows are tortured a lot for the extraction of milk in today's Iron Age world. They are given many injections.
Baba: And you (people in the world) are killing insects and mosquitoes; why are you torturing them? You are killing the flies by using so many insecticides; why are you torturing them? You are showing so much compassion for the insects-spiders and animals. Aren't you developing (the same) compassion towards the human beings? Arey, even the animals die for their fellow animals (of the same species), and you are in fact human beings. Despite being human beings you do not talk of the safety of the (fellow) human beings. You think of the animals. You have an animal-like intellect.

जिज्ञासु– लेकिन अत्याचार भी तो नहीं होना चाहिये गऊओं के साथ। वो कहते हैं कि भई गऊओं को.....
बाबा– अत्याचार कौनसा हो रहा है? उनको खिलाते पिलाते नहीं हैं? उनको चारा बैठे बैठाये नहीं देते हैं? देते हैं कि नहीं देते हैं? अरे आदमी से काम कराया जाता है तो उसे पैसा देते हैं कि नहीं देते हैं?
जिज्ञासु– हां जी।
Student: But cows should not be tortured as well. They say that cows…
Baba: In what way are they being tortured? Are they not being fed and given water to drink? Are they not being given fodder (to eat)? Are they given or not? Arey, when a man is made to work, is he paid for it or not?
Student: Yes.

बाबा– अपने घर में नौकर रखते हो कि नहीं रखते हो? क्यों रखते हो? उसके साथ अत्याचार क्यों कर रहे हो इतना? तुम्हें पचास हजार तनख्वाह मिल रही हैं तो पच्चीस हजार उसको भी दे दो। तुम्हारे घर का भांति बन करके तुम्हारे घर का सारा कार्य कर रहा है। पच्चीस हजार क्यों नहीं देते हो उसे? क्यों अत्याचार कर रहे हो उसके ऊपर? मनुष्यों को नहीं देखते, जानवरों को ज्यादा देखते हो।
Baba: Do you employ servants at your home or not? Why do you employ them? Why are you torturing him (servant) so much? If you are getting fifty thousand rupees as salary, then give twenty five thousand to him too. He is doing all the jobs at your home like a member of your family. Why don't you give him twenty five thousand (half of the salary)? Why are you torturing him? You don't care about the human beings; you care about the animals more.

समय– 31.24–35.15
दूसरा जिज्ञासु– एक प्रश्न ये था कि जो यहां सीता का पार्ट बजाने वाली आत्मा है, वो त्रेता में जाकर राम बनती है। यहां जो राम की आत्मा के द्वारा जो शूटिंग चल रही है कि वो आठवां नारायण से आर्य समाजी आधारमूर्त आत्मा से वो कंट्रोलिंग पावर लेती है, वो शुटिंग जो यहां चल रही है तो वहां त्रेता में आकर वो कंट्रोलिंग पावर दूसरी आत्मा के हाथों में नहीं जाएगा? जैसे जो यहां शुटिंग चल रहा है एक आत्मा के द्वारा तो वो जो बदलाव हो जाएगा, सीता राम बनेगी और राम सीता बनेंगे, तो जैसे वहां जो होगा तो दूसरी आत्मा के द्वारा हो जाएगा। ऐसा नहीं होगा?
बाबा– मूल प्रश्न क्या है समझ लिया आपने?
जिज्ञासु– नहीं मैं भी समझा नहीं।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Time: 31.24-35.15
Second student: I had a question that, the soul who is playing the part of Sita here becomes Ram in the Silver Age *(Treta)*. The shooting that is taking place here through the soul of Ram, that He takes the controlling power from the 8th Narayan, the Arya Samaji root-soul. That shooting which is going on here, won't the controlling power go in the hands of other soul there, after going in the Silver Age? Like the shooting that is going on over here by one soul, it will change over there. Sita will become Ram and Ram will become Sita, so the act that will take place there (of taking the controlling power), it will take place through the other soul. Won't it happen so?
Baba (to the student): Did you understand the main question?
Student: No, I too did not understand.

दूसरा जिज्ञासु– यहां रामवाली आत्मा के द्वारा जो शुटींग चल रही है कि राम वाली आत्मा आर्यसमाजी आत्मा से कंट्रोलिंग पावर लेते हैं और वो पावर लेकर वो त्रेता की स्थापना करते है। तो वो शुटींग यहां राम के द्वारा चल रही है, लेकिन यहां जो.....
Second student: The shooting that is taking place here (in the Confluence Age) through the soul of Ram of taking the controlling power from the Aryasama*ji* soul and after taking that power, he establishes the Silver Age. So, that shooting is taking place here through the soul of
Ram, but here the one who……..

बाबा– समझ गया। रामवाली आत्मा जो रावण संप्रदाय से लेती है माना आखरी नारायण से जो लेती है वो अपनी पावर से लेती है या आधी पावर विजयमाला की आती है प्योरिटी की तब लेती है? प्रैक्टिकल में कब लेती है?
दूसरा जिज्ञासु– प्यूरिटी का पावर के आधार पर।
बाबा– तो हिस्सा नहीं देना पड़ेगा?
दूसरा जिज्ञासु– हिस्सा देना पड़ेगा।
बाबा– अर्धांगिनी बनाना नहीं पड़ेगा?
दूसरा जिज्ञासु– हां।
बाबा– फिर तो बात हल हो गई।
Baba: I understood. Does the soul of Ram, who takes (the kingdom) from the Ravan community, i.e. from the last Narayan, takes it through his own power or does he take it when half of the power of purity comes from the *vijaymala* (rosary of victory)? When does it take (the controlling power) in practical?
Second student: On the basis of the power of purity.
Baba: So, will he not have to give a share?
Second student: He will have to give a share.
Baba: Will he not have to make her his partner (*ardhaangini*)?
Second student: Yes.
Baba: Then the question is solved.

जिज्ञासु– इनका पूछना ये है कि यहां तो रामवाली आत्मा लेती है वहां.....
बाबा– यहां रामवाली आत्मा नहीं लेती है। रामवाली आत्मा उसके सहयोग से लेती है। तब प्रैक्टिकल होता है।
जिज्ञासु– लेकिन वहां...
बाबा– तो प्रैक्टिकल किसने लिया? प्रैक्टिकल में पास कौन हुआ? रामवाली आत्मा या सीता वाली आत्मा?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु– सीता वाली आत्मा।
बाबा– तो वो ही लेगी।
जिज्ञासु– तो वहां वो राम बनेगी।
बाबा– हां राम बनेगी।
जिज्ञासु– वहां आखरी नारायण से वो गद्दी लेगी।
Student: Her question is that here it is the soul of Ram who takes (the controlling power) and there…
Baba: Here the soul of Ram does not take it. The soul of Ram takes it with her help. Then it happens in practical.
Student: But there…
Baba: So, who did it in practical (here)? Who passed in practical (here)? Is it the soul of Ram or the soul of Sita?
Student: The soul of Sita.
Baba: She will only take it.
Student: So, she will become Ram there.
Baba: Yes she will become Ram.
Student: She will obtain the throne from the last Narayan there.

बाबा– हां, ये तो 21 जन्मों का कांट्रैक्ट है। हम तुम्हारे सहयोगी बने तुम हमारे सहयोगी बनो। अर्धांगिनी का मतलब क्या है? राजा का ही राज्य चले? रानी का राज्य नहीं है?
जिज्ञासु– वो भी करेगी।
बाबा– और वहां तो एक जन्म में स्त्री एक जन्म में पुरूष बनना ही बनना है।
Baba: Yes, this is a contract for 21 births. I will become your helper; you become my helper. What does *ardhaangini* mean? Should only the king rule? Shouldn't the rule of the queen be there?
Student: She will also rule.
Baba: Mreover, there (i.e. in the Golden Age and the Silver Age) you have to certainly become a female in one birth and a male in the other birth (alternatively).

दूसरा जिज्ञासु– प्रश्न ये है कि जो एक आत्मा के द्वारा जो शूटिंग यहां चल रही है।
बाबा– क्या शूटिंग चल रही है? क्या उन्होंने प्रैक्टिकल में ले लिया? प्रैक्टिकल में राजाई लेने की शूटिंग चल रही है? रामवाली आत्मा प्रैक्टिकल में ले पाती है?
दूसरा जिज्ञासु– खुद नहीं ले पाती है।
बाबा– नहीं ले पाती है। तो आधा हिस्सा उधर देना पड़े ना। यही बात है। सीता वाली आत्मा राम बनेगी, राम वाली आत्मा सीता बनेगी। दोनों का राज्य कहा जायेगा। रामसीता का राज्य।
Second student: The question is that the shooting that is taking place here through a soul.
Baba: What shooting is going on? Did he achieve (the kingdom) in practical? Is the shooting of taking the kingship in practical going on? Is the soul of Ram able to take it in practical?
Second student: He is unable to achieve it himself.
Baba: He is unable to take (on his own). Therefore, he will have to give half of the share there, won't he? This is the only thing. The soul of Sita will become Ram; the soul of Ram will become Sita. It will be called the rule of both. The rule of Ram and Sita.

समय– 35.16–37.03
दूसरा जिज्ञासु– और दूसरा प्रश्न ये था कि यहां जो हमारा संबंध है – माता–पिता और भाई–बहन। वहां ब्रॉड ड्रामा में भी सतयुग, त्रेतायुग में वही संबंध रहेगा.....

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– मां–बाप और बच्चे।
दूसरा जिज्ञासु– तो प्रश्न ये है कि अष्ट देव कृष्ण के परिवार में कृष्ण के लिये कौन होंगे?
बाबा– हैं?
दूसरा जिज्ञासु– अष्ट देव कृष्ण के परिवार में, जो उनका पालन करेंगे वो कृष्ण के लिये कौन होंगे?
बाबा– जैसे रामवाली आत्मा पालन करने वाली है वैसे वो भी पालन करने वाले होगे, संगी साथी होंगे।
Time: 35.16-37.03
Second Student: And my second question was, here our relationship is of mother-father and brother-sister. The same relationship will exist in the Golden Age, Silver Age in the broad drama as well ….
Baba: Mother, father and children.
Second student: So, the question is, in the family of Krishna what will be the relationship between the eight deities *(Ashta Dev)* and Krishna?
Baba: Hum?
Second student: In the family of Krishna what will the eight deities, who sustain Krishna, be for Krishna?
Baba: Just as the soul of Ram is the one who takes care (of the children), similarly they too will be the ones to take care; they will be friends and companions.

दूसरा जिज्ञासु– संबंध कैसे होंगे?
बाबा– कोई संबंध नहीं, संबंध की क्या जरूरत है? संबंध जबरदस्ती लगाना जरूरी है?
दूसरा जिज्ञासु– नहीं।
बाबा– फिर?
जिज्ञासु– कौनसे कृष्ण की पालना की बात कर रहे हैं आप? सतयुगी कृष्ण की?
बाबा– सतयुगी कृष्ण की।
जिज्ञासु– सतयुगी कृष्ण की अष्टदेव पालना करेंगे?
दूसरा जिज्ञासु– यहां शूटिंग होगी। जो यहां शूटिंग होगी संगमयुग में तो वहां रहेंगे। तो अगर हम संबंध देखते है परिवार में। तो परिवार में बाप माता–पिता है और भाई–बहन है।
बाबा– हां भाई–बहन हैं। राधा–कृष्ण आपस में भाई–बहन हैं। और मां–बाप तो मां–बाप हैं ही।
Second student: What will be their relationship?
Baba: No relationship, what is the need for any relationship? Is it necessary to establish any relationship deliberately?
Second student: No.
Baba: Then?
Student: You are talking about the sustenance of which Krishna? Is it of the Golden Age Krishna?
Baba: Of Golden Age Krishna.
Student: Will the eight deities sustain the Golden Age Krishna?
Second student: The shooting will take place here. If the shooting will take place here in the Confluence Age, they will be there. So, if we see the relationships in a family, there is a mother and a father and a brother and a sister in a family.
Baba: Yes, there is a brother and a sister. Radha and Krishna are brother and sister among themselves. And the mother and father are certainly mother and father.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासु– वो आत्मायें किस रूप में होंगी?
बाबा– संगी–साथियों के रूप में।
जिज्ञासु– माताजी पूछ रही है कि क्या वो भी परिवार के सदस्य होंगे?
बाबा– जो अष्ट देव हैं संगी–साथियों के रूप में।
जिज्ञासु– परिवार के सदस्य नहीं होंगे?
बाबा– नहीं।
जिज्ञासु– परिवार तो सीमित होता है वहां पर।
बाबा– सीमित परिवार होता है। संगी–साथी होंगे।
Second student: In which form will those souls be?
Baba: They will be in the form of friends and companions.
Student: *Mataji* (mother) is asking whether they too will be the members of the family.
Baba: The eight deities are in the form of friends and companions.
Student: Will they not be members of the family?
Baba: No.
Student: The family is limited there.
Baba: The family is limited. They will be friends and companions.

समय– 37.10–38.37
दूसरा जिज्ञासु– जब परमधाम इस सृष्टि पर उतार लेंगे...
बाबा– हां।
दूसरा जिज्ञासु– तो उस परमधाम में पांच तत्वों की बात नहीं होनी चाहिये।
बाबा– पांच तत्वों के ऊपर जीत पाये हुये होंगे, पांच तत्वों से परे बुद्धि रहेगी या उनके साथ अटैचमेंट होगा?
दूसरा जिज्ञासु– बुद्धि से परे होना चाहिये।
बाबा– जब भूख प्यास ही संपन्न स्टेज में बंद हो जायेगा तो 5 तत्वों की जरूरत ही क्या रहेगी?
Time: 37.10-38.37
Second student: When we bring the Supreme Abode *(Paramdhaam)* down to this world…
Baba: Yes.
Second student: In that Supreme Abode, there should not be any question of the five elements.
Baba: Will we have gained victory over the five elements, will the intellect remain beyond the five elements or will there be an attachment with it?
Second student: The intellect should be beyond.
Baba: When there will be no hunger and thirst in the complete stage, then what will be the need for 5 elements?

दूसरा जिज्ञासु– एक प्रश्न यहां है – श्वास लेना–छोड़ना माना हवा एक तत्व है उस पर.....
बाबा– जब याद में हम बैठते है तो अनुभव करते है कि जब गहरी याद होती है तो श्वास–प्रश्वास भी बहुत धीमी हो जाती है। जब लास्ट स्टेज पहुंचेगी तो श्वास की भी हमें दरकार नहीं है। जैसे जो झूठे योगी होते हैं हठयोगी वो भी अपने कुंभक को साध लेते हैं। जो कुंभक साधते हैं अंदर सांस को रोक लेते हैं तो दो–दो, तीन–तीन, चार–चार दिन तक ऐसे ही श्वास रोके कुंभक में बैठे रहते है। फिर तीन दिन के बाद समाधि उनकी खुलती है। तो उनमें जब इतनी पावर आ जाती है तो हमारे में इतनी पावर नहीं आ जायेगी कि हम श्वास के बगैर रह सकें? क्या बड़ी बात हो गई? पांच तत्वों के आधीन नहीं होंगे बल्कि पांच तत्व हमारे आधीन होंगे।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Second student: There is a question (related to it), inhaling and exhaling means air (oxygen) is an element on which…
Baba: When we sit in remembrance we experience that when we are in deep remembrance , even the process of inhalation and exhalation becomes very slow. When we reach the last stage then there will be no need to breathe either. For example, the false *yogis*, the *hathyogis* (those who perform rigid physical exercises) also achieve the *kumbhaka* stage (the phase of withholding the breath after a single inhalation). Those who achieve the *kumbhaka* stage; hold their breath; they sit in the same position holding their breath in the *kumbhaka* stage for two, three, four days. Then they come out of the *Samadhi* after three days. So, when they achieve such power, then will we not achieve so much power that we can live without breathing? What is a big deal in it? We will not be dependent upon the five elements but the five elements will depend on us.

समय– 38.42
दूसरा जिज्ञासु– और एक प्रश्न था कि सिर्फ हिन्दु आत्मायें कन्वर्ट हो जाते हैं।
बाबा– कौन आत्मायें?
दूसरा जिज्ञासु– हिन्दु माना देवता।
बाबा– सिर्फ हिन्दु ही कन्वर्ट होते हैं। हां।
Time: 38.42
Second student: And another question was, only the Hindu souls convert.
Baba: Which souls?
Second student: Hindus, meaning the deities *(devta)*.
Baba: Only the Hindus convert. Yes.

दूसरा जिज्ञासु– दूसरे धर्म में भी दूसरे धर्मों में भी कन्वर्ट, कनवर्शन होता है। माना आत्मायें दूसरे धर्म अपनाकर दूसरे धर्म में हो जाते हैं। तो प्रश्न ये है कि जो कन्वर्ट होते हैं तो वो ओरीजनल वो ही हिन्दु आत्मायें है?
बाबा– जरूर होंगी। जरूर होंगी।
दूसरा जिज्ञासु– और कोई दूसरे धर्म वाली नहीं है ?
बाबा– नहीं। जो हिन्दु अपने को कहलाते हैं वास्तव में वो हिन्दु कहते हैं कि हम हिंसा को दूर करने वाले हैं। लेकिन वास्तव में हिंसा को दूर करनेवाले नहीं है, हिंसा को और ज्यादा बढ़ाने वाले हैं। वो हिंसा को जो बढ़ाने वाले हैं वो सारे विधर्मियों में कन्वर्ट होते हैं। थोड़ी सी आत्मायें है देवता धर्म की जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट नहीं होती। अपने धर्म के पक्के हैं। मुट्ठी भर।
Second student: Conversion also takes place in the other religions. It means that souls adopt other religions and start following that religion. So, the question is, are those who convert originally Hindu souls?
Baba: Certainly. Certainly.
Second student: Are they not from any other religion?
Baba: No. Those who call themselves Hindus, actually they (just) call themselves Hindus, who say that they are the ones to drive away violence; (but) in fact they are not the ones to drive away violence, instead they are the ones to increase violence even more. All those who are the ones to increase violence convert to become *vidharmis* (those who have inculcations opposite to that said by the Father). There are few souls of the deity religion who do not convert into other religions. They, those handful ones, are firm in their religion.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासु– तो इसका मतलब ये है...
बाबा– जो ब्रह्मा की गोद में पले हैं वो सब कन्वर्ट होते हैं।
दूसरा जिज्ञासु– इसका मतलब ये है कि जो दूसरे धर्म, जो हिन्दु धर्म से दूसरे धर्म में चले गये और वो ही आत्मायें फिर दूसरे धर्म में जायेंगे। और कोई आत्मायें नहीं?
बाबा– नहीं, नहीं। जो हिन्दु धर्म की आत्मायें थी वो ही कन्वर्ट होती है। दूसरा जन्म विदेशों में जाके जन्म लेंगे। दूसरा जन्म लेंगे तो भी वो ही कन्वर्ट होंगी। उनमें कन्वर्शन के संस्कार है।
Second student: So, it means….
Baba: All those who have received sustenance in Brahma's lap convert.
Second student: It means that those who have gone into other religions from Hindu religion, the same souls will go into other religions again. Not any other souls?
Baba: No, no. Only the souls, who belonged to the Hindu religion convert. They will take their next birth in the foreign countries. . Even if they take another birth only they will be the ones to convert. They have the *sanskars* of conversion.

समय– 40.45–41.31
दूसरा जिज्ञासु– अभी जो त्रिमूर्ति का नया क्लेरिफिकेशन दिया जाता है अभी मुरलियों में, क्लेरिफिकेशन्स में या वार्तालाप में, तो कोर्स सुनाते समय, कोर्स देते समय वो ही नया क्लेरिफिकेशन के अनुसार सुनाना है या जो पुराना वर्जन (version) था उसके अनुसार?
बाबा– जब ज्ञान में आलटरेशन करेक्शन होता रहता है तो करेक्ट चीज ही उठाना चाहिये, बादवाली या पुरानी चीज ही बताना चाहिये?
दूसरा जिज्ञासु– लगता है नई चीज, नया वर्जन....
बाबा– हां जो नई चीज निकल रही है और उसका फाउन्डेशन हमें मुरलियों में मिल रहा है तो हमें क्यों नहीं उसे अपना लेना चाहिये।
Time: 40.45-41.31
Second student: The new clarification of *Trimurty* that is given now in the *Murlis*, clarifications or in the discussion CDs, do we have to narrate as per the new clarification while giving course or as per the old version?
Baba: When alteration and correction keeps taking place in the knowledge then you should indeed take up the correct thing, the later thing or the old thing?
Second student: It appears that (we should take up and narrate) the new thing, new version.
Baba: Yes, when we are finding the foundations for the new things in the *Murlis* then, why should we not adopt it?

समय– 41.34–43.28
दूसरा जिज्ञासु– और एक प्रश्न है, एक प्रश्न है, जैसे बाबा समझाते हैं कि सतयुग में सिर्फ दिन होगा, रात नहीं होगी।
बाबा– हां।
दूसरा जिज्ञासु– उसके लिये मिसाल देते हैं–जैसे उत्तर ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में छह महीनों तक लगातार दिन और रात होती है। तो ऊपर से देखा जाये साइंस, विज्ञान के आधार पर देखा जाये तो ये इसलिये होता है कि पृथ्वी का जो.....
बाबा– धुरी।
दूसरा जिज्ञासु– .....धुरी है वो तिरछी है।
बाबा– तो वो सीधी नहीं हो सकती?
दूसरा जिज्ञासु– सीधी हो सकती है लेकिन.....
बाबा– तिरछी के मुकाबले बिल्कुल उल्टी नहीं हो सकती?
दूसरा जिज्ञासु– बिल्कुल हो सकती है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– कुछ भी हो सकता है।
Time: 41.34-43.28
Second Student: And another question is, just as Baba explains that there will be only day and no night in the Golden Age.
Baba: Yes.
Second Student: For that an example is given, just as there is continuous day or continuous night for six months in the North Pole and the South Pole. So, if we observe it on the basis of science, it happens because Earth....
Baba: The axis.
Student: The axis (of Earth) is inclined.
Baba: So, can't that (axis) become straight?
Second student: It can become straight but...
Baba: Can't it become opposite as compared to the inclined position?
Second student: It can certainly become.
Baba: Anything can happen.

दूसरा जिज्ञासु– तो प्रश्न ये है, किस पोजीशन में पृथ्वी होनी चाहिये ताकि....किस पोजीशन में वो धुरी होनी चाहिये?
बाबा– ये तो जिस पोजीशन में जब होगी तभी पता चलेगा। अभी पता नहीं चल सकता। एक मिसाल दिया है कि जब उत्तरी ध्रुव में छह महीने का दिन हो सकता है तो आधा कल्प का दिन क्यों नहीं हो सकता सृष्टि रूपी रंगमंच पर? हो सकता है।
दूसरा जिज्ञासु– क्योंकि पृथ्वी तो अपनी धुरी पे चक्कर काटेगी और सूर्य के चक्कर.....
बाबा– पृथ्वी हो या कोई भी तत्व हो सब सतोप्रधान, सतोसामान्य और रजो और तमो बनते हैं। तो पृथ्वी भी ऐसी स्टेज पकड़ती है कि जहां दिन ही दिन होगा। लेकिन जम्बू द्वीप में होगा, भारतवर्ष में होगा। पूरे सागर में नहीं होगा। सारी दुनिया सागर में डूब जायेगी। वहां अंधेरा रहेगा।
Second student: So, the question is, in which position should the Earth be so that.... in which position should that axis be?
Baba: It will be known only when it is in that position. It cannot be known now. An example has been given that when there can be day for six months in the North Pole, then why can't there be day for half a *kalpa* (cycle) on this stage-like world? It can happen.
Second student: It is because the Earth will rotate on its axis and revolve around the Sun...
Baba: Be it the Earth or any other element, everything becomes *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity), *satosamanya* (when there is ordinary goodness and purity), *rajo* (dominated by the quality of activity or passion) and *tamo* (dominated by the quality of darkness or ignorance) . So, the Earth too reaches a stage when there will be only day. But it will be in the *Jambu* Island, in India and not in the entire ocean. The entire world (except the Indian subcontinent) will submerge under the ocean. It will be dark over there (on the other lands).

समय– 43.45–49.00
दूसरा जिज्ञासु– मुरली में कभी–कभी बाबा बताते हैं – हम भारतवासी, हम भारतवासियों की संस्कृति, हमारी परंपराओं के अनुसार। तो यहां प्रश्न जिसने उठाया उन्होने पूछा 'हम' का मतलब 'हम' क्या है?
बाबा– 'हम' है 'शिव के बच्चे'।
दूसरा जिज्ञासु– हां, इसके लिये बताया।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– कन्वर्ट न होने वाले। हमारी परंपराए वो हैं जो संगमयुग में बाबा ने डाली हैं। वो ही हमारी पंरपराएं हैं।
दूसरा जिज्ञासु– मैंने प्रश्न का जवाब देने की कोशिश करते–करते ये सोचा लेकिन वो प्रश्न था कि शिव तो परंपराओं से परे है।
बाबा– शिव का बच्चा जिसमें प्रवेश करता है वो तो परंपराओं से परे नहीं है। शिव का सौ परसेंट ज्ञान उठाने वाला तो कोई बच्चा है। जब एक बच्चा ऐसा है तो उसमें संस्कार भी वैसे होंगे।
Time: 43.45-49.00
Second student: Sometimes Baba mentions in the *Murli*, 'we Indians', 'the culture of us Indians', 'as per our traditions'. So, the person who raised the question here has asked as to what does 'us' mean here?
Baba: 'Us' means 'Children of Shiv'.
Second student: Yes, it has been said for this.
Baba: Those who do not convert. 'Our traditions' are those which Baba has laid in the Confluence Age. Only those are our traditions.
Second student: While trying to reply to the question I thought about this aspect, but the question was that Shiv is beyond traditions.
Baba: Shiv's child, the one in whom Shiv enters, is in fact not beyond traditions. There is certainly some child who grasps Shiv's knowledge hundred percent. When there is one such child, then his *sanskars* will also be like that.

जिज्ञासु– बाबा माताजी ये पूछ रही है कि जैसे प्रजापिता वाली आत्मा है वो तो सारे विश्व की बाप वाली आत्मा है। तो फिर वो ऐसा क्यों कह रही है कि हम भारतीय हैं, हमारे भारत में ऐसी परंपरा है, 'हमारा भारत' जो ये वर्ड क्यों यूज़ करती है जबकि वो सारे विश्व का पिता है?
बाबा– इसलिये यूज़ करती है कि भारत में ही स्वर्ग बनाना है। विदेशों में स्वर्ग नहीं बनाना है। और जो अपने को विदेशी समझते हैं वो पहले ये पक्का करें कि आत्मा स्वदेशी–विदेशी नहीं होती है। शरीर स्वदेशी विदेशी होता है। वो देहभान में आ करके बोल रहे हैं। तो देहभान में आना बंद कर दें और अपने को आत्मा समझें स्वदेशी। वो क्यों अपने को विदेशी आत्मा समझते हैं? आत्मा स्वदेशी–विदेशी होती है क्या? पक्का है? फिर? शरीर स्वदेशी–विदेशी होता है। जब आत्मा परमधाम से उतरती है तो कहां उतरती है?
Student: Baba, *mataji* is asking that the soul of Prajapita is the soul who is the father of the entire world. So, why is he saying, 'we are Indians', 'there is such a tradition in our India'; why does he use the words 'our India' when he is the father of the entire world?
Baba: He uses (these words) because heaven is to be established only in India. Heaven is not to be made in the foreign countries. And those who consider themselves as foreigners should make it firm first that a soul is not *swadeshi* (Indian) or *videshi* (foreigner). The body is *swadeshi* or *videshi*. They are speaking under the influence of body consciousness. So, they should stop becoming body conscious and consider themselves to be souls, *swadeshi*. Why do they consider themselves to be foreigner souls? Is a soul *swadeshi* or *videshi*? Are you sure? Then? The body is *swadeshi* or *videshi*. When a soul descends from the Supreme Abode *(Paramdham)*, where does it descend?

दुसरा जिज्ञासु– भारत में उतरती है।
बाबा– भारत में उतरती है। तो क्या कहेंगे? कोई आत्मा ऐसी है, जो भारत में नहीं उतरती है। द्वापर युग से बहुत सी आत्मायें है जो विदेश में जाकर उतरती है।
दूसरा जिज्ञासु– ..... कभी–कभी होता है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा– कभी–कभी क्यों होता है? अपन को आत्मा क्यों नहीं समझते?
दूसरा जिज्ञासु– हां लेकिन वो लोग.....
बाबा– देह क्यों समझते हो? देह समझते हो तो ऐसा होता है आत्मा समझो तो नहीं होगा।
दूसरा जिज्ञासु– ऐसा ही उत्तर देना है?
बाबा– बिल्कुल उत्तर देना है।
दूसरा जिज्ञासु– अपने को आत्मा समझे।
बाबा– अपने को आत्मा समझो तो ये निगेटिव प्रश्न पैदा नहीं होंगे। नकारात्मक भाव तब ही पैदा होते है जब कि हम देहभान में होते हैं। या तो पांच तत्वों से हम प्रभावित हैं। या तो माया से प्रभावित हैं। या तो दोनों से प्रभावित हैं। तो हमारे अंदर नकारात्मक संस्कार पैदा होते हैं, भाव पैदा होते हैं। अगर हम आत्मिक स्थिति में रहें तो नकारात्मक संस्कार पैदा ही नहीं होंगे।

Second student: It descends in Bharat (India).
Baba: It descends in Bharat. So what will be said? Is there any soul which doesn't descend in Bharat? There are many souls who descend in the foreign countries since the Copper Age.
Second student: …….it happens sometimes.
Baba: Why does it happen sometimes? Why don't they consider themselves to be souls?
Second student: Yes, but they....
Baba: Why do you consider yourself to be a body? It happens like this when you consider yourself to be a body; if you consider yourself to be a soul, it will not happen like this.
Second student: Should we reply like this?
Baba: You should definitely reply like this.
Second student: (We should reply that) they should consider themselves to be a soul.
Baba: If you consider yourself to be a soul, then these negative questions will not arise. Negative feelings arise only when we are in body consciousness or when we are under the influence of the five elements or under the influence of *Maya* or under the influence of both. Then negative *sanskars*, feelings emerge in us. If we remain in soul conscious stage, then the negative *sanskars* will not emerge at all.

दूसरा जिज्ञासु– बाबा वहां देश में लोगों से बातें करते समय, ज्ञान समझाते समय ऐसे प्रश्न अक्सर आते हैं।
बाबा– उनको घड़ी–घड़ी.....इसलिये तो मुरली में कहा, घड़ी–घड़ी याद दिलाते रहो तुम आत्मा हो।
दूसरा जिज्ञासु– भगवान आते हैं और ऐसा क्यों कहते हैं कि हम.....
बाबा– भगवान आते हैं तो भगवान बिन्दी है या देह है? क्या है? और जिन बच्चों को देखता है उनको बिन्दी रूप में देखता है कि देह रूप में देखता है?
दूसरा जिज्ञासु– बिन्दी के रूप में।
बाबा– तो जिन बच्चों को बिन्दी रूप में देखता हूँ वो भी अपने को बिन्दी बनायें ना। वो देहभान में क्यों बैठे हुये हैं? देह भान में रहकरके प्रश्न क्यों करते हैं?
दुसरा जिज्ञासु– सबसे पहले ज्ञान नहीं सुनाना चाहिये, उनको आत्मिक स्थिति का.....
बाबा– ये आत्मिक स्थिति का ज्ञान नहीं है? ये भी तो ज्ञान है।
दूसरा जिज्ञासु– हां जी।

Second student: Baba, there, in our (laukik) country while talking (to the people), while explaining the knowledge such questions often emerge.
Baba: Again and again……that is the reason why it is said in the *Murlis* that you should remind them again and again, 'you are a soul'.
Student: When God comes why does He say that we....

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: When God comes, is God a point *(bindi)* or a body? What is He? And the children whom He sees, does He see them in a point-form or in the form of a body?
Second student: In the form of a point.
Baba: So, the children whom I see in the form of a point (soul), they should also make themselves a point, shouldn't they? Why are they sitting in body consciousness? Why do they raise questions in body consciousness?
Second student: First of all, we should not narrate knowledge to them, they should be taught the soul conscious stage…….
Baba: Is this not the knowledge of soul conscious stage? This is also knowledge.
Second student: Yes.

बाबा– ये तो पहली सीढ़ी है। ये पहली सीढ़ी ही पक्की नहीं होगी तो सारा ज्ञान चौपट हो जाता है। ये ज्ञान की ही लिस्ट है पहली। पहली सीढ़ी है अपने को आत्मा समझो।
दूसरा जिज्ञासु– ये प्रश्न बार–बार उठते है।
बाबा– बार–बार उठते हैं तो देहभान आता है तो उठते हैं। कोई भी प्रश्न, प्रश्नात्मक वातावरण बनता है तो देहभान के कारण ही बनता है। आत्मिक स्थिति में अगर शुरूआत से ही स्थित हुये पड़े हों जबसे कोर्स लेना शुरू किया है तो प्रश्न ही पैदा नहीं होंगे। औरों–औरों से प्रभावित होते रहते हैं तो देहभान आ जाता है।
Baba: This is the first step. If this very first step is not strong then the entire knowledge becomes a waste. This is indeed the first step of knowledge. The first step of knowledge is to consider yourself to be a soul.
Second student: This question emerges again and again.
Baba: If it emerges again and again, it emerges when body consciousness emerges. If any question emerges, if an atmosphere of doubts is created, then it becomes only due to body consciousness. If they are constant in soul conscious stage from the very beginning, ever since they have started taking the course, then the questions will not emerge at all. When they keep being influenced by others, they body consciousness emerges.

समयः 49.10–52.23
बाबा – क्या बात है?
जिज्ञासु – वो पर्सनल प्रश्न के रूप में था इसलिए...
बाबा – पर्सनल प्रश्न तो क्या ? है तो प्रश्न ना। आप जैसी आत्माओं का ग्रुप और नहीं होगा?
जिज्ञासु – होगा।
बाबा – होगा ना? तो उनके अंदर पैदा होते रहेंगे। उनका समाधान नहीं करोगे?
Time: 49.10-52.23
Baba: What is the matter?
Student: That was a personal question, therefore...
Baba: Personal question? So what? Anyways, it is a question, isn't it? Will there not be a group of souls like you?
Student: There will be.
Baba: It will be there, won't it? Questions will keep emerging in their mind. Will you not solve them?

जिज्ञासु – वो जो शुरुआत में हमने सुना था कि जो संस्कृत की गीता है उसकी भी व्याख्या बाबा ने करवाई थी और मम्मा से लिखवाया था सारा किसी डायरी में।
बाबा – हां, जी।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु – तो क्या वो.....?
बाबा – शुरुआत में लिखवाया था ये किसने कहा?
जिज्ञासु – माना 76 के बाद।
बाबा – 76 के बाद माना एडवांस पार्टी में?
जिज्ञासु – हां, जी।
बाबा – हां।
Student: We heard in the beginning that Baba had clarified the *Sanskrit* Gita and it was written by Mamma in a diary.
Baba: Yes.
Student: So, will that...
Baba: Who said that it was written (through Mamma) in the beginning?
Student: I mean, after (the year) 76.
Baba: By 'after 76', do you mean to say in the advance party?
Student: Yes.
Baba: That is right. .

जिज्ञासु – तो वो क्या सबके सामने कभी आयेगा वो?
बाबा – क्यों नहीं आयेगा? जब दूसरे धर्म वाले, दूसरे मत–मतान्तर वाले अपनी गीता उन्हीं श्लोकों को अर्थ बता सकते हैं तो फिर एडवांस ज्ञान सच्चा है, उस सच्चे ज्ञान के अनुसार वो गीता के श्लोकों का अर्थ नहीं किया जा सकता?
जिज्ञासु – मतलब अभी फिर नये सिरे से बाबा उसकी व्याख्या करेंगे या जो उस समय....
बाबा – परिपक्व स्टेज में जब ज्ञान पहुँचेगा तो उसकी व्याख्या भी मिलेगी।
Student: So, will that come before everyone sometime?
Baba: Why not? When people belonging to the other religions, people of different opinions can tell their own meanings of the *shlokas* of the Gita, then can't those *shlokas* of Gita be clarified as per the true (advance) knowledge?
Student: I mean to say, will Baba clarify it afresh or whatever was narrated at that time (in 1976)....
Baba: When the knowledge reaches the stage of perfection (*paripakwata*) then its clarification will also become available.

जिज्ञासु – लेकिन वो जो लिखी जा चुकी है.....
बाबा – गीता के जो श्लोक लिखे गये हैं, वो तमोप्रधान दुनिया में लिखे गये हैं या आदि में लिखे गये थे?
जिज्ञासु – आदि में।
बाबा – आदि में शास्त्र भी सतोप्रधान थे या तमोप्रधान थे?
जिज्ञासु – सतोप्रधान।
बाबा – सतोप्रधान ही, सतोप्रधान श्लोकों में कुछ दो–एक बढ़ा दिया हो, घटा दिया हो वो बात दूसरी है। बाकी सारी गीता तो वो ही है जो सात्विक स्टेज में पहले लिखी गयी थी। तो ज्ञान भी सात्विक स्टेज में आना चाहिए ना। अभी रिफायनरी(निंग) चल रहा है।
Student: But what about that which has already been written....
Baba: Were the *shlokas* of Gita written in the *tamopradhan* world or in the beginning?
Student: In the beginning.
Baba: Were the scriptures *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) or *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance) in the beginning?
Student: *Satopradhan*.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: They were certainly *satopradhan*; it is a different issue if one or two *shlokas* would have been added or decreased in those *satopradhan shlokas*. And as for the rest, the entire Gita is the same as it was written in the pure *(satvik)* stage. So, the knowledge should also reach the pure stage, shouldn't it? Now the refinery (i.e. refining) is going on.

जिज्ञासु – लेकिन वो जो लिखित रूप में एडवांस पार्टी की शुरूआत में जो व्याख्या दी गई थी तो वो क्या पी.बी.केज को मिल सकती है?
बाबा – उन्होंने जो वहां दबा कर रखी है कराची में, उसकी तफतीश की जाए। उसका शोधकार्य किया जाए।
जिज्ञासु – नहीं, उसकी नहीं। अभी 76 के बाद जो बाबा ने जो रिसर्च करके जो गीता की व्याख्या की है और जो लिखित रूप में शायद उपलब्ध है, वो मिल सकती है क्या?
बाबा – टाईम आएगा तो मिलेगी।
जिज्ञासु – अभी छपी नहीं है।
बाबा – नहीं।
Student: But can the PBKs get the clarification (of the Gita) that was given in the beginning of the Advance Party in a written form?
Baba: Whatever they have buried in Karachi should be investigated, researched.
Student: No, not that. Can we get the clarification Baba has given now after (19)76, after doing research and which is probably available in a written form?
Baba: When the time comes, you will get it.
Student: Has it not been published yet?
Baba: No.

जिज्ञासु – तो ऐसा अगर छप जाए तो सभी को पढ़ने को मिल जाए वो भी।
बाबा – टाईम आएगा तो मिलेगा। तब तक, हर चीज ड्रामा में नूंध है। उसके एडीटर बनने के लिए तो अभी से लोग तैयार है। हमे दे दो तो हम एडीटर बन जाए। एकाधिकार हमारा बन जाए।
जिज्ञासु – हम तो सिर्फ पढ़ना चाहते है कि उसमें क्या बातें लिखी गई है, किस तरह से व्याख्या की गई है।
बाबा – हां, हां, जब पब्लिश होगी तो एकसाथ ही पब्लिश होगी ना।
जिज्ञासु – हांजी।
Student: So, if it is published, then it will become available for everyone to read.
Baba: When the time comes, it will become available. Until then, everything is fixed in the drama. People are ready to become its Editor right from now. (They say) give it to us; so that we will become its Editor. Our monopoly should be over it.
Student: We just want to read whatever is written in it; how the clarifications (of Sanskrit Gita) have been given in it.
Baba: Yes, whenever it is published, it will be published entirely, won't it?
Student: Yes.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info